जीविका
ग्रामीण विकास विभाग, बिहार सरकार

जीविका समाचार पत्रिका

।। माह – मई 2022 ।। अंक – 22 ।। केवल आंतरिक वितरण हेतु।।

अन्दर के पृष्ठों में...

जीविका से बढ़ा सम्मान और आमदनी (पृष्ठ – 02)

सिलाई की कमाई से घर में आई तरक्की (पृष्ठ – 03)

सिलाई –सह– उत्पादक केंद्र (पृष्ठ – 04)

गैर कृषि गतिविधि

उत्पादक कंपनी की स्थापना से दीदियों द्वारा निर्मित उत्पादों को मिली नई पहचान

बिहार के ग्रामीण क्षेत्रों में जीविका समूह से जुड़े गरीब परिवारों के सामाजिक और आर्थिक सशक्तीकरण हेतु जीविका द्वारा गैर कृषि आधारित विभिन्न आजीविका गतिविधियों का संचालन किया जा रहा है। इसी कड़ी में विभिन्न गतिविधियों से संबंधित उत्पादक समूहों (पीजी) का गठन किया गया है। इन उत्पादक समूहों द्वारा महिला उद्यमियों को संगठित कर उन्हें प्रशिक्षित किया जाता है। साथ ही आजीविका संबंधी बुनियादी चुनौतियों का सामना करने हेतु उन्हें क्षमतावान बनाया जाता है। एक उत्पादक समूह में 15 से 50 महिला उद्यमी जुड़ी होती हैं। इसी तरह कई उत्पादक समूहों को मिलाकर एक उत्पादक कंपनी (पीसी) का गठन किया जाता है। जीविका में गैर कृषि आधारित गतिविधियों के तहत 2 उत्पादक कंपनियों की स्थापना की गई है। पहला, शिल्पग्राम महिला प्रोड्यूसर कंपनी लिमिटेड और दूसरा, मधुग्राम महिला प्रोड्यूसर कंपनी लिमिटेड। इन कंपनियों से हजारों महिला उद्यमी जुड़कर अपनी आजीविका को आगे बढ़ा रही हैं। जीविका द्वारा गठित महिला उत्पादक कंपनियों द्वारा मुख्य रूप से सदस्यों का क्षमतावर्द्धन करने, उन्हें कारोबार हेतु आसानी से वित्तीय सहायता उपलब्ध कराने, उत्पादों के लिए एक मानक डिजाइन विकसित करने, विपणन को प्रोत्साहित करने के साथ–साथ उद्यम को आगे बढ़ाने हेतु योजना तैयार करने एवं समन्वय स्थापित करने जैसे कार्य किए जाते हैं।

शिल्पग्राम : शिल्पग्राम महिला प्रोड्यूसर कंपनी लिमिटेड की स्थापना 1 अक्टूबर 2018 को की गई थी। इसका मुख्यालय दरभंगा में है। वर्त्तमान में दरभंगा, मधुबनी और मुजफ्फरपुर के आस–पास के क्षेत्रों की 500 से अधिक महिला उद्यमी इसकी सदस्य हैं। सामूहिक स्वामित्व और पूर्णतः महिला उद्यमियों द्वारा संचालित शिल्पग्राम प्रोड्यूसर कंपनी 1000 से अधिक ग्रामीण महिला कारीगरों के सामाजिक और आर्थिक सशक्तीकरण के लिए समर्पित है। इसका मुख्य उद्देश्य उत्पादक समूह से जुड़ी महिला कारीगरों का क्षमतावर्द्धन करने के साथ–साथ डिजाइन और विपणन में सहयोग प्रदान करते हुए उनकी वित्तीय स्थिति में सुधार करना है। कंपनी पारंपरिक हस्तशिल्प कौशल को प्रोत्साहित करने के साथ ही शहरी उपभोक्ताओं को बिहार के स्थानीय कला रूपों से जोड़ता है। शिल्पग्राम द्वारा समर्थित हस्तशिल्प वस्तुओं में मुख्य रूप से मधुबनी पेंटिंग और उससे जुड़े विभिन्न उत्पाद, सुजनी, बावन बूटी परिधान, सिक्की शिल्प, भागलपुरी रेशम और पत्थर की मूर्तियां आदि शामिल हैं। इस प्रकार शिल्पग्राम बिहार की समृद्ध संस्कृति, परंपराओं और कला रूपों को बढ़ावा देने और इसे प्रदर्शित करने का प्रयास करता है। स्थानीय कला से निर्मित इन हस्तशिल्प वस्तुओं का विपणन कई माध्यमों से किया जाता है। इनमें मुख्य रूप संस्थागत माध्यम से खरीदारी को बढ़ावा दिया जाता है।

इसके अलावा खादी मॉल पटना और कल्याण मॉल, दरभंगा में बिक्री केंद्र स्थापित किए गए हैं। साथ ही भारतीय हस्तकरघा मेला, आजीविका मेला, सरस मेला आदि के माध्यमों से इन उत्पादों को प्रदर्शित एवं प्रोत्साहित किया जा रहा है। वहीं जीविका के पोर्टल shop.brlps.in (शॉप.बीआरएलपीएस.इन) पर जून 2020 से समूह द्वारा निर्मित उत्पादों की बिक्री का कार्य प्रारंभ किया गया है। वेबसाइट पर बेचे जाने वाले उत्पादों में मास्क, मधुबनी पेंट वाली साड़ी, मधुबनी पेंटिंग, सिक्की पेंटिंग, बुद्ध प्रतिमा, मधुबनी पेंटेड फोल्डर आदि हस्तशिल्प शामिल हैं।

मधुग्राम : जीविका समूह से जुड़े हजारों परिवारों द्वारा मधुमक्खी पालन का कार्य किया जा रहा है। इस गतिविधि से उनके द्वारा गुणवत्तापूर्ण शहद का उत्पादन हो रहा है। मधुमक्खी पालकों को संगठित करने, उनका क्षमतावर्द्धन करने, विभिन्न स्तरों पर उन्हें सहायता उपलब्ध कराने एवं आजीविका गतिविधियों में वृद्धि करने के उद्देश्य से मधुग्राम महिला प्रोड्यूसर कंपनी लिमिटेड की स्थापना की गई है। इसका मुख्यालय हाजीपुर में है। कंपनी की स्थापना से उत्पादकों एवं उपभोक्ताओं के बीच बिचौलियों को दूर करने और खुद का एक ब्रांड स्थापित करने में मदद मिल रही है। मुजफ्फरपुर, खगड़िया, पूर्वी चंपारण, वैशाली, समस्तीपुर और भागलपुर जिलों में मधुमक्खी पालन गतिविधि से जुड़े परिवार कंपनी के सदस्य हैं। मधुग्राम उत्पादक कंपनी द्वारा जीविका समूह से जुड़े परिवारों को मधुमक्खी पालन गतिविधि से जोड़ने, उनका क्षमतावर्द्धन करने, उन्हें मधुमक्खी का बक्सा/छत्ता उपलब्ध कराने, उत्पादित शहद की ब्रांडिंग, विपणन एवं इसके मूल्य संवर्द्धन में सक्रिय सहयोग प्रदान किया जाता है। ग्राम संसाधन सेवी के रूप में प्रशिक्षित पेशेवर कार्यरत हैं जो मधुमक्खी पालकों को तकनीकी सहयोग प्रदान करते हैं। उत्पादक कंपनी के गठन से मधुमक्खी पालन संगठित उद्यम के रूप में विकसित हुआ है। साथ ही शहद की गुणवत्ता का निर्धारण एवं इस पर नियंत्रण रखना संभव हुआ है। इससे जीविका दीदियों द्वारा उत्पादित शहद को एक ब्रांड के रूप में विकसित करने में मदद मिल रही है।

जीविका से बढ़ा सम्मान और आमदनी

मधुबनी जिला के रहिका प्रखंड अंतर्गत जीतवारपुर गांव की संगीता देवी सामान्य ग्रामीण महिला थीं। आर्थिक एवं सामाजिक समस्या से उन्हें निरंतर जुझना पड़ रहा था। घर–परिवार की उन्नति उनका सपना था। लेकिन उन सपनों को पूरा करने का कोई रास्ता नहीं मिल पा रहा था। एक रास्ता उन्हें तब मिला जब वह 2013 में कमला जीविका स्वयं सहायता समूह से जुड़ीं। समूह की वजह से उन्हें घर से बाहर निकलने का अवसर मिला। मधुबनी जिला का पारंपरिक लोक–कला मधुबनी पेंटिग है। जिससे मधुबनी जिला का प्रत्येक घर किसी न किसी रूप से जुड़ा हुआ है। संगीता भी अपने सास से मधुबनी पेंटिग करना सीखीं। जिसका लाभ उन्हें कालांतर में मिला। शिल्पग्राम महिला प्रोडूसर कंपनी लिमिटेड का गठन किया गया और संगीता ने प्रोड्यूसर कंपनी से जुड़ गयीं। इससे जुड़कर उन्हें पेंटिंग के विषय में और ज्यादा गहन जानकारी मिली। इस कला में वह इतनी प्रखर हो गयीं कि उन्होंने राजस्थान के जयपुर में आयोजित सरस मेंला में भी भाग लिया और जीविका मधुबनी के परचम को जयपुर में लहराया। मधुबनी पेंटिंग इनके आय का मुख्य साधन बन गया। संगीता घर एवं प्रोड्यूसर कंपनी दोनों जगह मधुबनी पेंटिग का काम करती हैं। कला के इस विद्या के कारण वह काफी आगे बढ़ चुकी हैं। संगीता की इच्छा और आगे बढ़ने की है। इस पारंपरिक कला के माध्यम से उन्हें अबतक तीन लाख से ज्यादा की आमदनी हो चुकी है। इन पैसों का उपयोग उन्होंने परिवार की बेहतरी के कार्यो में किया। जीविका के माध्यम से कराए गये बेसिक एवं एडवांस ट्रेनिंग से उन्हें काफी सहायता मिली। संगीता देवी के अनुसार जीविका से उन्हें मान–सम्मान तो मिला ही साथ ही अजीविका संवर्द्धन का अनेकों अवसर मिल रहा है। आर्थिक स्थिति में सुधार के बाद संगीता एवं उनका परिवार एक बेहतर जीवन जी रहा है।

मधुमक्खी पालन ने बदली सुनैना दीदी की जिंदगी

सुनैना देवी मुजफ्फरपुर जिले के मीनापुर प्रखंड अंतर्गत घोसौत गांव की रहने वाली हैं। कभी गरीबी के कारण खेतों में मजदूरी करने वाली सुनैना आज गांव की सभी महिलाओं के लिए प्रेरणा का स्रोत बन गयी हैं। उनके अर्श से फर्श तक पहुंचने में जीविका का बहुत बड़ा योगदान रहा। जीविका में जुड़ने के बाद उनके जीवन में काफी बदलाव आया।

सुनैना देवी ने समूह से ऋण लेकर गाय पालन शुरु किया। लेकिन साल 2014 में जब जीविका द्वारा मधु उत्पाद को लेकर उत्पादक समूह का गठन किया जा रहा था, तो सुनैना भी पूजा जीविका मधु उत्पादक समूह से जुड़ गयीं। शुरुआत में जीविका द्वारा प्रशिक्षण के बाद अनुदानित दर पर उनको 10 मधुमक्खी बॉक्स मधु पालन के लिए दिया गया। मधुमक्खी पालन की गतिविधि सुनैना को इतनी अच्छी लगी कि उन्होंने अपना पूरा समय इसमें देना शुरू कर दिया। आज इसी का परिणाम है कि आज उनके पास 250 मधुमक्खी बॉक्स है। कभी खुद दूसरे के यहां मजदूरी करने वाली सुनैना देवी आज मधुमक्खी पालन के इस काम को करने के लिए दूसरों को मजदूरी पर रख कर मधु उत्पादन कर रही हैं। आज मधु उत्पादन से वह सालाना 5 से 6 लाख का व्यवसाय कर रही हैं।

सुनैना देवी के द्वारा उत्पादित मधु की गुणवत्ता और काम के प्रति लगन को देखते हुए वैशाली जिले के हाजीपुर में स्थित मधुग्राम महिला प्रोड्यूसर कम्पनी लिमिटेड के निदेशक मंडल का सदस्य बनाया गया है।

सुनैना देवी कहती हैं कि–'जीविका ने ना सिर्फ उनको और उनके परिवार को बल्कि पूरे गांव को एक अलग पहचान दी है। जीविका के आने से आज गांव की हर महिला जीविकोपार्जन के किसी ना किसी माध्यम से जुड़कर अपने परिवार में आर्थिक सहयोग कर रही हैं।'

सिलाई की कमाई से घर में आई तरक्की

सुपौल जिला के मरौना प्रखंड अन्तर्गत बेलही पंचायत स्थित वार्ड नं–4 की रहने वाली भगवानी देवी कपड़ों की सिलाई का काम करती हैं। कपड़ों की सिलाई से होने वाली आमदनी के बदौलत ही वह अपने परिवार का भरण–पोषण करती हैं और उसका परिवार अब तरक्की की राह पर अग्रसर है।

भगवानी देवी वर्ष 2014 में श्याम जीविका स्वयं सहायता समूह से जुड़ी एवं विभिन्न गतिविधियों में अपनी दिलचस्पी लेने लगी। इससे उसमें जागरूकता आई और आत्मविश्वास पैदा हुआ। भगवानी देवी अपने घर के लिए पैसे अर्जित करना चाहती थी। यह सोच कर उसने नवंबर 2014 में अपने समूह से 10,000 रुपये ऋण लेकर सिलाई मशीन खरीदी। चूंकि वह पूर्व से ही कपड़ों की सिलाई का काम जानती थी, लेकिन अब तक किसी को इस बारे में जानकारी नहीं थी। समूह से जुड़ने के बाद पड़ोस की दीदियों ने पता चला तो सभी लोग भगवानी देवी से अपने कपड़े सिलवाने लगी। देखते ही देखते उसके पास ढ़ेरों काम आने लगा। इसके बाद उसने समूह से ऋण लेकर दो और सिलाई मशीन खरीदकर अपने कारोबार का विस्तार किया। वह अपने घर पर कपड़ों की सिलाई के साथ–साथ सिलाई सिखाने का भी काम करने लगी। पास–पड़ोस की लड़कियां, जो सिलाई का काम सिखना चाहती थीं, भगवानी दीदी के पास आने लगीं। धीरे–धीरे उसके पास चार मशीनें हो गई। वह कपड़े सिलने और सिलाई सिखाने का काम करने लगी हैं। इस काम से भगवानी दीदी को प्रतिमाह लगभग 8 से 10 हजार रुपये की आमदनी होने लगी है। वह प्रत्येक दिन अपने घर का काम पूरा कर दिनभर कपड़ों की सिलाई करती हैं। इस कार्य से होने वाली आमदनी से भगवानी दीदी का घर अब तरक्की की राह पर अग्रसर है।

हुनर से स्वावलंबन की ओर

आजीविका की वैकल्पिक सुविधा प्रदान कर कृषि पर आधारित अत्यधिक निर्भरता को कम करने की जरुरत के मद्देनजर जीविका द्वारा गैर कृषि कार्य को बढ़ावा देने का प्रयास निरंतर जारी है। स्थानीय स्तर की जरूरतों, सुविधाओं, आवश्यकताओं एवं बाज़ार की उपलब्धता को ध्यान में रखकर गैर कृषि कार्यों की संभावनाओं पर जीविका द्वारा रणनीति बनाकर कार्य किए जाने के कारण इसके परिणाम काफी सुखद रहे हैं। इस सुखद परिणाम का सफल उदाहरण है बक्सर जिले के ब्रहमपुर प्रखंड में जीविका दीदियों द्वारा संचालित उत्सव जीविका महिला सिलाई उत्पादक समूह। कोरोना काल के दौरान जिले में मास्क की कमी को पूरा करने के लिए उत्सव जीविका महिला सिलाई उत्पादक समूह की शुरूआत हुई। समूह द्वारा मांग के अनुरूप लहंगा, पेटीकोट, ब्लाउज, खोल आदि का निर्माण एवं उसकी आपूर्ति की जा रही है। इस कार्य से जहां दीदियों को रोजगार मिला है वहीं, वह आर्थिक रूप से सशक्त हो रही हैं। बिहार सरकार के निर्देश के अनुरूप राज्य के सरकारी स्कूलों में भी ड्रेस निर्माण एवं आपूर्ति की प्रक्रिया जारी है। पिछले दो साल में उत्सव जीविका महिला सिलाई उत्पादक समूह ने सिर्फ मास्क की बिक्री करते हुए लगभग साढ़े तीन लाख रुपये का शुद्ध मुनाफा कमाया है। अब अन्य कपड़ों की सिलाई–कटाई और बिक्री करते हुए समूह से जुड़ी 32 जीविका दीदियां प्रति माह तीन से चार हजार रुपये कमा रही हैं। समूह की अध्यक्ष मंजू देवी ने बताया कि–'समूह में कुल 32 जीविका दीदियां सिलाई–कटाई का कार्य करती हैं। अब साड़ी, लेडिज सूट एवं लहंगा–चुन्नी आदि के निर्माण एवं बिक्री की योजना है। प्रखंड प्रशासन, ब्रह्मपुर ने दीदियों को प्रखंड परिसर में अवस्थित स्वर्ण जयंती ग्राम स्वरोजगार भवन को केंद्र चलाने के लिए उपलब्ध कराया गया है।

सिलाई सह उत्पादक केंद्र

राज्य में गैर कृषि गतिविधियों को बढ़ावा देने के लिए जीविका द्वारा विभिन्न क्षेत्रों एवं कई स्तरों पर विभिन्न कार्यक्रमों का संचालन सफलता पूर्वक किया जा रहा है। संचालित कार्यक्रमों की सफलता एवं उसके सुखद परिणाम को देखते हुए गांव की महिलाओं द्वारा सिलाई–सह–उत्पादक केंद्र की स्थापना जीविका की एक और पहल है। ग्रामीण महिलाओं के आर्थिक स्वावलंबन के उद्देश्य से जीविका द्वारा गैर कृषि क्षेत्र एवं सूक्ष्म उद्यम के विभिन्न कलाओं से जुड़ी वैसी महिलाओं की पहचान की गई, जो इसे रोजगार के रूप में अपनाना चाह रही थीं। सबसे पहले जीविका से जुड़ीं महिलाओं को उन्मुखीकरण कर उन्हें स्वरोजगार के लिए उनके हुनर के हिसाब से उत्पादक समूह के गठन, तकनीकी दक्षता आदि के लिए प्रशिक्षित किया गया। पिछले तीन सालों से राज्य के कई जिलों के ग्रामीण क्षेत्रों में कई सिलाई सह उत्पादक केंद्र सफलतापूर्वक संचालित हैं। कई दौर की बैठकों में सिलाई केंद्र चलाने की इच्छुक एवं चयनित जीविका दीदियों द्वारा सिलाई–सह–उत्पादक केंद्र खोलने एवं उसे चलाने के लिए रणनीति बनाई जाती है। तत्पश्चात जीविका महिला सिलाई उत्पादक समूह का गठन किया जाता है। टीम के सदस्य अपने बीच से अध्यक्ष, सचिव एवं कोषाध्यक्ष का चयन करते हैं।

तत्पश्चात् जीविका द्वारा उत्पादक समूह को व्यापार की योजना, निर्माण एव वित्त पोषण हेतु प्रशिक्षण दिया जाता है। इसके बाद उत्पादक समूह को वित्तीय सहायता प्रदान की जाती है। सदस्यों की भी भागीदारी और जिम्मेवारी सुनिश्चित करने के उदेश्य से प्रति सदस्य सदस्यता राशि निर्धारित की गई है। जीविका महिला सिलाई उत्पादक समूह की खरीददारी समिति को खरीददारी के गुर सिखाये जाते हैं। उन्हें सिलाई मशीन, कपडे, फर्नीचर आदि की खरीददारी के लिए प्रशिक्षण के बाद सामानों की खरीददारी के लिए कोटेशन हेतु बाज़ार भेजा जाता है। कोटेशन आने के बाद उत्पादक समूह की बैठक में सबसे कम दर पर उचित एवं सही सामान आपूर्ति करने वाले आपूर्तिकर्ता को सिलाई मशीन, कपडे, फर्नीचर आदि की आपूर्ति की जिम्मेवारी दी जाती है। अत्याधुनिक सिलाई मशीन, हेवी इंडस्ट्रियल मशीन, इंडस्ट्रियल मशीन, टेबल, पंखा और आलमीरा समेत जरुरत के अन्य सामानों की खरीद प्रोक्योरमेंट के नियमों के तहत की जाती है। सिलाई उत्पादक समूह द्वारा निर्मित मास्क को मांग के अनुरूप विभिन्न संस्थानों को आपूर्ति उचित दर पर किया जा रहा है। साथ ही उत्पादित कपड़ो को स्थानीय बाज़ार के साथ ही सरस मेला जैसे बड़े बाज़ार में बिक्री की जाती है। अब राज्य के सरकारी स्कूलों के लिए भी यूनिफॉर्म बनाने एवं मांग के अनुरूप आपूर्ति करने की प्रक्रिया जारी है।

जीविका द्वारा पोषित एवं जीविका से संबद्ध विभिन्न संगठनों द्वारा संचालित जीविका महिला सिलाई उत्पादक समूह द्वारा उत्पादन एवं आपूर्ति के अवसर मिलने से गैर कृषि कार्य से जुडी जीविका दीदियों के लिए आर्थिक उन्नति एवं जीविका दीदियों के हुनर के अनुरूप स्वावलंबी बनाने हेतु एक अवसर है। इसके परिणाम भी सापेक्षित हैं। कोरोना काल में मास्क का उत्पादन एवं मांग के अनुरूप आपूर्ति कर उत्पादक समूह ने लाखों रुपये का शुद्ध मुनाफा कमाया है। सिलाई उत्पादक समूह और उससे जुडी जीविका दीदियां अब आत्मनिर्भरता की ओर अग्रसर हैं।

जीविका, बिहार ग्रामीण जीविकोपार्जन प्रोत्साहन समिति, विद्युत भवन – 2, बेली रोड, पटना – 800021, वेबसाइट : www.brlps.in

संपादकीय टीम
- श्रीमती महुआ राय चौधरी –कार्यक्रम समन्वयक (जी.के.एम.)
- श्री पवन कुमार प्रियदर्शी – परियोजना प्रबंधक (संचार)

संकलन टीम
- श्री राजीव रंजन – प्रबंधक संचार, समस्तीपुर
- श्री राजीव रंजन – प्रबंधक संचार, पूर्णियाँ
- श्री बिप्लव सरकार – प्रबंधक संचार, कटिहार
- श्री विकास कुमार राव – प्रबंधक संचार, सुपौल
- श्री रौशन कुमार – प्रबंधक संचार, बक्सर